रहे। सबसे पहले 1947 में राष्ट्र निर्माण की बात भारत में कही गई। ये राष्ट्र निर्माण का विचार कैसे आया? विचार यहां से अंकुरित हुआ कि अभी तक यह राष्ट्र नहीं था। हम राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में लगे हैं। राष्ट्र निर्माण में जिनका योगदान रहा उनको हमने राष्ट्रपिता कहा और इसको संचालित करने वाले को हमने राष्ट्रपति कहा। उस समय देश का नेतृत्व करने वाला वर्ग पश्चिमी विचारों से प्रभावित था। इसलिए सारी कल्पनाएं भारत की मूल कल्पना से हटकर पैदा हुई। राष्ट्रवाद की कल्पना तब बनी उन लोगों के मन में

पश्चिमी जगत ने परिकल्पना रखी थी। वही बात उनके मन में बैठी और इसलिए राजनैतिक राष्ट्रवाद को स्वीकार कर लिया गया। धर्म के आधार पर पाकिस्तान की मांग को नहीं रोका गया। ज़्योंकि उस समय राष्ट्र की परिकल्पना अलग बन गई थी। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की जगह राजनैतिक राष्ट्रवाद आ गया था। यदि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद मन में होता तो इस देश के विभाजन को स्वीकार नहीं किया जाता। परन्तु दुर्भाग्य रहा कि उस समय के अपने नेतृत्व ने इसको गलत ढंग से लिया और भारत सांस्कृतिक दृष्टि से एक है, इस बात पर ध्यान नहीं दिया गया।

इसलिए भाषाओं के आधार पर प्रान्तों की रचना की गई। उस समय राज्यों की रचना के लिए परमपूज्यनीय श्री गुरूजी ने कहा था कि यह प्रशासनिक सुविधाओं के आधार पर करना चाहिए, ना कि भाषाओं के आधार पर। लेकिन, गुरुजी के मन्तव्य से अलग भाषाओं को इकाई माना गया। सभी राज्यों की रचना भाषाओं के आधार पर की गई। फैडरेशन आफ स्टेट्स ज़्या है? कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और राजस्थान की सीमाओं से लेकर उत्तर-पूर्व के पहाड़ियों तक फैला देश सांस्कृतिक दृष्टि से ज़्या एक नहीं है, परन्तु राजनैतिक दृष्टि से इसका विभाजन किया गया। जिसके परिणाम आज हम भुगत रहे है।। आज भी भाषाओं के आधार पर दो राज्य आपस में संघर्ष करने के लिए खड़े होते हैं। आवश्यकता है किसी भी राज्य में रहने वाले आपस में सांस्कृतिक एकता को अपने जीवन मूल्यों, जीवन शैली को समझकर छोटी-मोटी सुविधाएं मांग सकते है। लेकिन आपस में संघर्ष का कारण राजनैतिक दृष्टि से उनका किया गया बंटवारा है। इसी संघर्ष से राज्यों में क्षेत्रीय दल खड़े हो गए हैं। क्षेत्रीय दल अपने राज्य की मांग के लिए दबाव बनाते हैं। इससे क्षेत्रवाद तेजी से बढ़ा है। भाषाई बंटवारे के कारण अपनी छोड़कर दूसरों की भाषा के प्रति अश्रेष्ठता का भाव बढ़ रहा है। इधर कुछ वर्षों का इतिहास बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण रहा है। राज्यों को जिस आधार पर विभाजित किया गया, वह फैसला देश की एकात्मता के सामने चुनौती बन गया है। लोग खालिस्तान मांगने लगे हैं। अब द्रविडस्तान की मांग भी उठ रही है। वनवासी अपना अलग राज्य चाहने लगे हैं। उत्तर- पूर्व क्षेत्र में ग्रेटर नागालैण्ड की मांग उठ रही है। इस प्रकार की राजनैतिक सोच तेजी से विकसित होती जा रही है। अध्ययन करने पर ध्यान आता है कि इसके पीछे विदेशी शज़्तियां विभेदकारी विचारों को जन्म देने के लिए काम कर रही हैं। हमें इसे समझने की जरूरत है। अभी यूएनओ ने ट्राईबल डे (आदिवासी दिवस) मनाने का प्रस्ताव पारित किया है। इसे भारत में प्रचारित करने का लगातार प्रयास हो रहा है। भारत के मूल निवासी जनजाति, गरीब, दलित है। बाकी सब बाहर से आए हैं। इस तरह का दुष्प्रचार करके संघर्ष का